REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 6 | MARCH - 2019

१८५७ का विप्लव और गुजरात

डा. निलेशकुमार जी. वसावा
आसि.प्रोफसर, सरकारी विनयन कोलेज वांकल, जी.सुरत.

❊ इ.स.१८५७ में बलवा में गुजरात की भूमिका :

उत्तर हिंद में प्रचंड स्वरुप से शुरु हुआ यह बलवा का युध्ध और उसके असर गुजरात में हुए। उस की असर ज्यादातर गुजरात के उत्तर और पूर्व सरहदो पर हुई। नांदोर, दाहोद, गोधरा, रेवाकांठा तथा महीकांठा और लुणावाडा का प्रदेश क्रांति में जुडे। अहमदाबाद में वडोदरा, सुरत और भरुच में क्रांति की सफलता के लिए कुछ प्रयास हुआ और वहाँ क्रांति के विजय के लिए प्रार्थनाएँ भी हुई। उत्तर गुजरात, पंचमहाल और चरोतर में गेरिला पध्धति के प्रयोग भी हुए। इस साल की जुलाई माह की छठ्ठी तारीख को दाहोद के थाणखार केप्टन बकले पर भी हमला हुआ। उसम पंचमहाल के मुस्लिम, मामलतदार, जमीनदार तथा पाँचसो जितने इन्सान जुडे। वहाँ बंड करने वालो का छ दिन अमल रहा। गोधरा भी आग के सिलग गया लेकिन कम समय में बंडकार पीछे हुए अंदर क्रांतिकार पकडा उसमें से चार को तोप के मुँह पर चढाए गए और नव को केद तथा एक को काले पानी की सजा दी गई।

गुजरात में सिपाहीओने पहला जाल अहमदाबाद में बिछाया। ९ जुलाइ को गुजरात घोडेसवार फोज के सात सिपाहीओ की दारुभंडार कब्जे करने का प्रयास किया लेकिन अन्य सैनिको का साथ न मिलने पर उन्हें पकड नहीं सके और उनको भागना पडा। अंग्रेज उनके पीछे पड गये, गोलीबार किया और सातो को फाँसी पर लटकाया गया। ऐसा ही दूसरा प्रयास तोपखाने के वालंदाओ की तरफ से हुआ। तोपो का कब्जा लेने गये इन्सान गभरा गये और उनको फाँसी की सजा मिली।

राजपीपला को कुछ रंग लगा वहाँ सैयद मुरादअली नांदोद के मामलतदार, सिंधि जमादार और उनके चारसो सैनिक भरुच के सिपाही आदि वहाँ जमा हो गए। 'चलो दिल्ही' का नारा उन्होने गजाया और अंग्रेजी राज्य खतम हो गया है। ऐसा एकबार तो ख्याल आया उस समय मुंबई म भी सिपाहोओ को जलाने का कारस्तान रचा लेकिन वह पहले से पकडा गया।

लुणावाडा की गादी के बारे में अंग्रेजो के साथ उनके वारसदार की दुश्मनी थी। उनके वारसदा सुरजमल की जमावट वहाँ पर थी। वह चारणो के पाला गाम में है ऐसी गलत बातमी मिलते ही अंग्रेजो ने पूरा गाम जला दिया। उत्तर गुजरात के डीसा, समडी, पालनपुर और शिरोही भी बलवा करने में बाकात न रहा। आसपास के मुखी और साथीओका सहकार लेकर उन्होने गाम संरक्षक दल शुरु किया। ऐसा करने का कारण यह था कि अंग्रेज पाक का नाश करते, गाम लूंटते चारो तरफ त्रास गुजारते थे। गरबड मुखी के गाम रडाक दल के गोरे सैनिक सोए थे। तभी उनके उपर छापा मारा। गोरे सैनिको के खोराक के लिए रखी हुई गाये उन्होने छुडाई। गोरे सैनिको के घोडे की पूँछ काट दी और गोरे सैनिक भाग गये। इसीलिए खेडा जिल्ला में हाहाकार मच गया। इस तरीके से गरबड मुखी ने खेडा में ही नहीं लेकिन उत्तर में आबु तक और दूसरी तरफ महीकांठा के सीमडा और भरुच राजपीपला तक बलवा की व्यवस्था करने में मसबत और सभी व्यवस्था करने लगा। इसी समय दिल्ही के बहादुर शाहजहा फिरोजशाह पंदर हजार की फौज लेकर मुंबइ तरफ आता था। इस समाचार से गुजरात के बंड करनेवालो का उत्साह बढा लेकिन इतने में अहमदाबाद के सैनिक टुकडी पकडने के समाचार मिले और बाजी पलटने लगी फिर भी क्रांतिकारी बिलकुल नाहिंमत न हुए। उत्तर गुजरात के खेरालु, वडनगर, विजापुर आदि में सैनिको की भरती का काम चालु रखा लेकिन यह काम बहोत लंबा न चला। गबरड मुखी का ऐक्का कम होने लगा और पीछेहठ होने लगी। इतने में सप्टेम्बर की २० तारीख को दिल्ही का कब्जा अंग्रेजो ने फिर से ले लिया और क्रांतिकारीयों पर इसकी बहोत असर हुई, बहोत से बंडकार पकडा गये। अंग्रेजोने न्याय का नाटक किया, कुछ बंडकारो को तोप से उडाया और कुछ बंडकारो को फाँसी दी और कुछ बंडकारो को काले पानी की सजा दी। देशभर में और गुजरात में भी कुछ समय में बलवा थमने लगा। गुजरात में शांति हुई एसा लगने लगा लेकिन क्रांति के पडघे तो कुछ समय तक चालु रहे। १८५७ का विप्लव थम गया लेकिन गुजरात में तो १८५८ तक उसके पडघे पडते रहे। भीलोने बंड चालु रखा। पंचमहाल के रुपा नायक और केवल नायक ने नारुकाटे पर छापा मारा। तात्याटोप सैनिक आ जाने से चांपानेर और नारुकोट प्रदेश उनके कब्जे हुआ। तात्याटोप ने भी इस अरसे में गुजरात में आये हुए दगाबाजी से तात्याटोपे को पकड लीया। १८५९ के मार्च माह में रुपा नायक और केवल नायक ने अंग्रेजो की शरण में आना पडा।

कर्झन के ऐसे उलटे वलण से स्वदेशी चलवल ज्यादा जम गई। स्वातंत्र्य संग्राम काम बंगाल ने शुरु किया और इस चलवल का झंडा भी उन्हाने उठाया लेकिन इस चलवल को बराबर झेलने वाले गुजरात ही था। गुजरात ने इस चलवल में बहोत अच्छा हिस्सा लिया और कुछ सालो बाद स्वातंत्र्य की अलग-अलग लडत चाली हुई उसमे गुजरात अग्रेसर रहा।

अहमदाबाद में 'स्वदेशी उद्योग वर्कर मंडली' इ.स. १८७६ में अहमदाबाद के बढते जाते कापड और अन्य उद्योग को टेका देने के लिए स्थापना की। उसमें अंबालाल, साकरलाल, रणछोडलाल, छोटालाल, प्रेमाभाइ, हेमाभाइ, जशभाइ आदि ने आगेवानी ली थी। उस वक्त से स्वदेशी को उत्तेजन देने के लिए विचारो के प्रचार अहमदाबाद में शुरु हुआ था। इ.स.१९०६ में अहमदाबाद में रीची रोड पर एक मकान में स्वदेशी चलवल के बारे में विद्यार्थीओ की एक सभा मीली थी। उसमें वंदेमातरम का गुजराती में गाया हुआ जीवणलाल देसाइ ने उसमें भाषण किया और यह चलवल के लिए सभी प्रकार की मदद करने के लिइ कहा। इस अरसे में विरमगाम तालुका के देकावाडा गाम में भी सभा भराई थी। इस तरह मांडल गाम में भी सभा भराई थी। इस सभाआ में गणिको ने भी अच्छी संख्या में हिस्सा लीया था। यह एक तरीके से सूचक था लेकिन यह तो प्रारंभ था। बंगाल की चलवल पहले अहमदाबाद में इ.स.१९०३ स्वदेशी वस्तु संरक्षक मंडली की शुरुआत हुई थी। इस चलवल से अच्छा वेग मिला।

स्वदेशी की प्रवृत्ति गुजरात में तो त्रीस साल पूरानी थी और उसका कारण इस प्रदेश में देशी उद्योगो का क्रमिक प्रारंभ और विकास होने लगा था यह था। लेकिन इ.स.१९०५ में देशभर में स्वदेशी चलवल चली उसमें कापड से लेकर कुसर तक चीजें स्वदेशी लेने एसा प्रसार अच्छे तरीके से हुआ। मुंबई में भी यह चलवल अच्छी चली और उसमें गुजरातीओने अच्छा हिस्सा लिया। मुंबई के मोटुगना गोपी तालाब में स्वदेशी बाजार भराया था। उसमें सुरत के रेशम के वेपारीओने भी हिस्सा लीया था। वडोदरा में और उसमें अखंड तालुका में स्वदेशी चीजे और खास करके देशी खांड का उपयोग करने का ठराव हुआ था।

उस जमान में ज्यादातर राष्ट्रीय प्रवृत्ति बडे शहर तक मर्यादित रहती। ज्यादा विरोध हो तो वह मध्यम कक्षा के शहरो तक पहोंचती। ऐसी स्थिति इ.स.१९१५ गांधीजी हिंद आये तब तक रही और उन्होने खेडूतो की लडत लडने लगे। उसके बाद ही सही अर्थ में गाँवो में यह लगत पहोंची एसा कह सकते है। वहाँ तक तो गाँव में राष्ट्रीय चलवल है। कोंग्रेस की प्रवृत्तियों से अश्पृश्य थे ऐसा कहने में कोई अतिशयोकित नहीं। इस ऐतिहासिक हकीकत को ध्यान में लेने से यह समझना बहोत सरल बनता है कि विरगाम और सखेडा जैसे कस्बो के गावों में स्वदेशी चलवल पहोंची। यह चलवल उस समय का सही पारा दर्शाता है। वह चलवल विरोध का प्रदर्शन तथा स्वदेशी की भावना और उस प्रकार के वर्तन से मर्यादित थी। यह तो उसके कितने परिणाम पर से देख सकते है। सुरत जिल्ला में श्री कुवरभाई शिक्षक थे फिर भी स्वदेशी का प्रचार का काम गाँवो में करते। अपने गाँव में तंबु बांधकर इस काम का प्रचार किया उसके परिणाम में उनकी बारडोली तालुका के वधड गाम में तबादला किया गया। उस वक्त वह दक्षिण आफिका में प्रगट हुए गाँधीजी के 'इन्डियन ओपिलियन' का अभ्यास करते थे और उस पर से बारडोली तालका में गाँधीजी के विचारो तथा उनके काम का लोगो को परिचय करवाते।

यह चलवल पहले गुजरात के नवोत्साहित युवक वर्ग नयी नयी प्रवृत्तियाँ उठाने के लिए कटिबध्ध हुए थे। जनसेवा की प्रेरणा लेकर कुछ करने की तमन्ना उनके दील में पेदा हुई थी। ऐसे युवान कार्यकर्ताओने कृपाशंकर पंडित, डॉ.हरिप्रसाद व्रजराय चंप, मणिशंकर पंडित, गोकलदास शाह, जीवणलाल मगनलाल चतुरभाइ पटेल, कृष्णलाल हरताइ आदि में सलाह मार्गदर्शन मिले थे। हुन्नर उद्योग और विज्ञान के शिक्षण के लिए प्रोत्साहन देने को प्रवृत्तियाँ भी की थी। उसके परिणाम साहित्य शिक्षण और समाज सुधारो के क्षेत्र में अच्छी प्रगति दे शके। इस अरसे में ज्ञातिपत्र संमेलन भराया। सुरत और अहमदाबाद में महिला विद्यालय शुरु हुए। चरोतर अेज्युकेशन सोसायटी की स्थापना के लिए तथा सुरत में कोलेज आदि प्रवृत्तियों का प्रारंभ और विकास हुआ। गुजरात की अस्मिता शब्द का उपयोग का प्रारंभ मुनशी ने किया। लेकिन उस वक्त की गुजरात की विविध प्रवृत्तियों में भी जीवन डालने का प्रारंभ तो रणजीतराम वावाभाई ने किया था। कवि नानालाल ने कहा था गुजराती अस्मिता में प्रगटीकरण का प्रारंभ आधुनिक युग के समय में हुआ था।

✲ संदर्भ सूचि :

१. डॉ.जमीनदार रसेश, ''स्वाधिनता संग्राम में गुजरात'', प्रथम आवृत्ति, इतिहास और सांस्कृतिक विभाग, गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद, १९८३
२. श्री देसाइ इश्वरलाल इ., ''लडत के गीत'', स्वातंत्र्य इतिहास समिति, जिल्ला पंचायत, सुरत, १९७७०
३. डॉ.देसाइ शांतिलाल म., ''राष्ट्र का स्वातंत्र्य संग्राम और गुजरात'', पहली आवृत्ति, युनिवर्सिटी ग्रंथ निर्माण बोर्ड, गुजरात राज्य, अहमदाबाद, १९७२
४. डॉ.धारैया आर. के., ''१८५७ में गुजरात'', गुजरात युनिवर्सिटी, अहमदाबाद, १९७०
५. डॉ.धारैया आर. के., ''अठारासो सत्तावन' पहली आवृत्ति, गुजरात युनिवर्सिटी, अहमदाबाद, १९७१
६. डॉ.पटेल मंगुभाइ रा., ''भारत के स्वातंत्र्य संग्राम और उसके घडवैये'', तीसरी आवृत्ति, युनिवर्सिटी ग्रंथ निर्माण बोर्ड, गुजरात राज्य-अहमदाबाद, १९९४
७. पंड्या विष्णु, डॉ.आरती पंड्या, ''१८५७ : कुछ प्रवाह'', भो.जे.अध्यापन संशोधन विद्याभवन, अहमदाबाद, २००८
८. पंड्या विष्णु, ''गुजरात में सशस्त्र स्वातंत्र्य संग्राम का इतिहास'' (१८५७ से १९४५)
९. शुक्ल जयकुमार र., ''गुजरात के स्वातंत्र्य सैनिक'', माहितीकोश, पहली आवृत्ति, गुजरात विश्वकोश ट्रस्ट, अहमदाबाद, १९९८
१०. ''स्वातंत्र्य संग्राम के घडवैये'' गुजरात राज्य, परिचय ग्रंथ-१, माहिती खाता, गुजरात सरकार, सचिवालय, अहमदाबाद, जान्युआरी-१९६९
११. ''स्वातंत्र्य संग्राम के घडवैये'' गुजरात राज्य, परिचय ग्रंथ-१, माहिती खाता, गुजरात सरकार, सचिवालय, अहमदाबाद, अप्रिल-१९७६

डा. निलेशकुमार जी. वसावा
आसि.प्रोफसर, सरकारी विनयन कोलेज वांकल, जी.सुरत.

LBP PUBLICATION